4.Bijay Chandra Boro and Kokila Saxena, *The impact of work-life balance on the wellbeing of employees in the tea gardens of Bodoland territorial region,* 6(S3), International Journal of Health Sciences, pp- 11972–11982, (2022). Available at https://www.researchgate.net/publication/362087073_impact_of_work-life_balance_on_the_wellbeing_of_employees_in_the_tea_gardens_of_Bodoland_territorial_region
5.Bidisha Mahanta, *Gender Gap among the BPL Households of Tea Gardens and Villages of Dibrugarh District of Assam,* 12(1), Rupkatha Journal on Interdisciplinary Studies in Humanities, (2020
6.Dipali Basumatari and Phanindra Goyeri, *Educational Status of Tea Plantation Women Workers in Assam: An Empirical Analysis,* 1(3), Asian journal of multidisciplinary studies, pp.17-26, (2013).
1.
7.Dr. Bharat Dhiman and J.C. Bose, Role of Education in Empowering Women: A Systematic Review (September 9, 2023). Available at SSRN: https://ssrn.com/abstract=4568381
8.Horen Goowalla, *Labour Relations Practices in Tea Industry of Assam-With Special Reference to Jorhat District of Assam,* 1(2), IOSR Journal of Humanities and Social Science, pp 35-41, (2012). Available at https://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/vol1-issue2/G0123541.pdf
9.Himakshi Bhuyan, *Status of the Tea Garden Women Workers of Assam: An Analysis, 6(5),*International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR),pp 1-5, (2024), available at https://www.ijfmr.com/papers/2024/5/27004.pdf
10.Pronab JyotiPowreland Snehal Mishra,*Job Satisfaction Level Among the Tea Garden Workers in Biswanath District of Assam, India.* 46(8). Journal of Experimental Agriculture International ,pp-570-76. (2024). available at https://journaljeai.com/index.php/JEAI/article/view/2737
11.MridusmitaDuara and Sambit Mallick, *Women Workers and Industrial Relations in Tea Estates of Assam,* 55(1), Indian Journal of Industrial Relation. Pp 15-26, (2019). Available at https://www.researchgate.net/publication/333892562_Women_Workers_and_Industrial_Relations_in_Tea_Estates_of_Assam
12.Nura Afrin Kuasha et al, *An Investigation on Livelihood Status of Tea Workers at Doldoli Tea Garden,* 17(1), Journal of Agro Forestry and Environment, pp- 13-19. (2024), available at https://www.researchgate.net/publication/380712554_An_Investigation_on_Livelihood_Status_of_Tea_Workers_at_Doldoli_Tea_Garden_Sylhet
13.Samir Kr. Sen et al, *Empowerment and Women's Empowerment – A Theoretical Basis*, 5(3), International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), (2023).
14.Shilpi Das and Doyel Karmakar, *Lifestyle of Women In Tea Garden Community: A Systematic Literature Review,* 6(6), International Journal for Multidisciplinary Research, pp 1-11, (2024) available at https://www.researchgate.net/publication/388448860_Lifestyle_of_Women_in_Tea_Garden_Community_A_Systematic_Literature_Review

शब्दों का खाकरोब कहानी में आर्थिक समस्याएँ

उमा बणिचुल
शोधार्थी
हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय-हैदराबाद

समस्या कहने का तात्पर्य कठिन प्रसंग, कठिन विषय, जटिल स्थिति, उलझा हुआ मामला, मुसीबत आदि को माना जाता है। आर्थिक समस्या कहने से आर्थिक क्षेत्र में परेशानी के अनेकी स्थिती को समझा जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ होती है। विभिन्न कारणों से आर्थिक समस्या आती रहती है। यह है- अशिक्षा, बेरोजगारी, निर्धनता एवं दारिद्रता, भूमि संबंधी विषमताएँ, ऋणग्रस्तता, भष्टाचार, घूसखोरी, व्यसनाधीनता, दहेज प्रथा, यांत्रिकीकरण, प्राकृतिक कारक, शोषण, जमींदार एवं साहूकार वर्ग अथवा उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण आदि।

अशिक्षा और बेरोजगारी:-आधुनिक युग में भी भारत जैसे देश में लगभग तीस प्रतिशत आबादी अशिक्षित है। सर्वेक्षण से पता चलता है कि पुरूषों की तुलना में महिलाओं की अशिक्षा संख्या कहीं अधिक है। इतनी बडी आबादी के अशिक्षित होने से देश के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है। अशिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक है- निर्धनता, निर्धनता और अशिक्षा के बीच में परम्पर संबंध है। यह भी कहा जा सकता है कि अशिक्षा से गरीबी बढती है एवं गरीबी बढने से लोग शिक्षित नहीं हो पाते। एक दूसरे के लिए दोनों दोषी है।

भारत कृषि प्रधान देश है। इसकी अस्सी प्रतिशत अबादी गाँव में निवास करती है। आधुनिक युग में शहरी चकचौंधता से प्रभावित होने के कारण गाँवों की अबादी में कुछ कमी आई। गाँव में अशिक्षित लोग शिक्षा का महत्व समझ नहीं पाते जिसके कारण वह अपने बच्चों को विद्यालय नहीं भेज पाते। फलतः वे अशिक्षित रह जाते हैं। अशिक्षा के कारण अच्छे रोजगार नहीं मिल पाते जिससे गरीबी बढ़ती जाती है, मेहनत-मजदरी करनी पड़ती है, नहीं तो सेठ-साहूकारों तथा जमीदारों के कर्ज़ के चंगुल में फँस जाते हैं।

'शब्दों का खाकरोब' कहानी संग्रह में 'मुकदमा' प्रमुख कहानी है। इस कहानी का प्रमुख पात्र पूरन गाँव में रहने वाला एक सरल एवं मेहनती आदमी था। वह कृषि एवं मजदूरी करके अपने परिवार का गुज़ारा कर रहा था। उसका एक चचेरा भाई था मूलू जो शहर में रहता था। वह पूरन के पैतृक संपत्ति पर अपना अधिकार का जमाना चाहता था। जिसके लिए वह गलत तरीके से अपनाकर पूरन की ज़मीन हडप कर अपने मित्र राम प्रसाद को बेचना चाहता था। अतः उसने पूरन के खिलाफ़ मुकदमा दर्ज़ कर दिया। चपरासी ने मुकदमे का नोटिस पूरन को देते हुए अगूँठा लगाने को कहा जिसका वर्णन कहानी में इस प्रकार किया गया है-

"चपरासी के कहने पर पूरन ने जहाँ बताया अँगूठा लगा दिया। बेचारा समझ नहीं पाया, आज तक केवल लगान की रसीद पर ही अँगूठा लगाया था।" इससे स्पष्ट होता है कि पूरन यदि पढ़ा-लिखा अर्थात शिक्षित होता तो उस मुकदमे के नोटिस को अच्छी तरह पढ़कर समझ पाता। इस प्रकार चपरासी के कहने पर तुरंत बिना सोचे समझे अगूँठा नहीं लगाता। अशिक्षा के कारण उसे शिक्षित व्यक्ति की हाँ में हाँ न मिलाना पड़ता। अपने अधिकार को प्राप्त करने के लिए दूसरों पर निर्भर न रहना पड़ता है।

भ्रष्टाचार-भारत देश में भ्रष्टाचार बहुत बड़ा तथा व्यापक रूप ले चूका है। कुछ लोग कानूनी नीति नियमों को उल्लंघन कर भ्रष्टाचार को बढावा

देते हैं। जिसके कारण लोगों ने नैतिकता एवं चारित्रिक निम्नता दिखाई देती है। भ्रष्टाचार आज के समय में आर्थिक विकास की सबसे बड़ी बाधा है। भ्रष्टाचार के द्वारा गलत मार्ग अपना कर अधिक से अधिक मुनाफा व धन कमाया जाता है। भ्रष्टाचार के अनेक रूप है यथा- मुनाफाखोरी, पद का दुरूपयोग, घुसखोरी, मिलावट, कर्तव्यपरायणता में आलस्य, सामाजिक दायित्व के विरूद्ध आचरण आदि। देश के सरकारी कार्यालयों, पुलिस विभाग, न्यायालय, प्रशासन, राजनीति और शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भ्रष्टाचार ने अपने पैर पसारे हैं।

'शब्दों का खाकरोब' में 'मुकदमा' कहानी का मुख्य पात्र पूरन है जो कि अनपढ़ था। वे कृषि एवं मजदूरी करके अपना परिवार चलाता था। उसका एक चचेरा भाई था मूलु जो कि शहर में नौकरी करता था। ज़मीन बँटवारे को लेकर मूलू ने मुकदमा तहसील कार्यालय में दायर कर दी थी उस समय पुलिस ने आकर जो कार्य किया उसका वर्णन निम्न में है -

"ज़मीन भी सरकार ने कुर्क कर दी। पुलिस का सिपाही आया और गहूँ की सुपुर्दगी मुच्छल बाँकेलाल को दे गया। बाँकेलाल निहायत पियक्कड़ है और यह तयशुदा था कि वह सारी फसल बेचकर थाने में कुछ हिस्सा पहुँचाकर बाकी हड़प कर जाएगा।" इससे स्पष्ट विदित है कि पुलिस आकर दोनों के कार्य को आसान करने की बजाय जीवन शैली को और अधिक क्लिष्ट बना गई। पुलिस द्वारा फसल को जोर जबरदस्ती बेचना एवं लूट कर ले जाना, उनके पद के दुरूपयोग के साथ-साथ भ्रष्टाचार का एक अन्य उदाहरण है।

जब पूरन की ज़मीन को कुर्क कर दिया गया तो वह चिन्तित हो गया। घटना को सुलझाने के लिए तथा अपने अधिकार को पाने के लिए रिश्वत द्वारा जेब गरम करने का विचार कहानी में वर्णित है-

"पूरन ने हाथ जोड़ लिए बोला" माई-बाप, ज़मीन हमारी। गरीब आदमी है, आप ही मालिक है।" थानेदार ने थोड़ी दया दिखाकर दोनों पक्षों को थाने बुलाकर पंचायत की दोनों तरफ के कागज देखे। दोनों तरफ से दाम वसूली की।" गरीब कृषक पूरन का नाम पर खेत संबंधि मुकदमा होने से इन्स्पेक्टर धमकाने लगा। पूरन हाथ जोड़कर सच्चाई बताने की कोशिश किया। थानेदार ने बात को सुलझाने के लिए पूरन और मुकदमा करने वाला चचेरा भाई मूलू को थाने पे बुलाया था ।इससे प्रतीत होता है कि मुनाफाखोरी करना भी भ्रष्टाचार है।

****

संदर्भ:-

1. राजू शर्मा- हलफनामे, पृ. – 103.
2. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब (मुकदमा), पृ.-13.
3. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब (मुकदमा), पृ.-13.
4. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब (मुकदमा), पृ.-13.
5. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब (मुकदमा), पृ.-13.

समकालीन स्त्री के बदलते मायने

डॉ. सीमा चन्द्रन
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी व तुलनात्मक साहित्य विभाग,
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
पेरिया पोस्ट, तेजस्विनी हिल्स, कासरगोड- 67132
ई-मेल-seemachandran@cukerala.ac.in

प्रस्तावना: समकालीन स्त्री परंपरा के घेरे में न होकर भी धकेल दी जाती है। समकालीन स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर भी रंगीन चुभते तानों या व्याख्या के परे अपनी पहचान पा नहीं पाती। पारिवारिक ज़िम्मेदारी वर्तमान समय में भी स्त्री के ही कंधों पर है। आर्थिक स्वतंत्रता के साथ बहु-टास्किंग का कार्य स्त्री को ही करना है। यदि कहीं पर भी कोई चूक हो गई तो नाकाबिल हालात को नहीं स्त्री को ही समझा जाता है। इस बीच यही दोनों कार्य शारीरिक बल से संपूर्ण पुरुष को भी करना हो तो उन्हें भी समान दिक्कत होगी। शायद स्त्री से ज़्यादा। परंतु स्त्री को कमज़ोर की श्रेणी में रखकर कई कार्य थोपे जाते रहे हैं। समकालीन लेखन किस हद तक बदलाव ला सकती है, इसे जानना होगा। बदलाव हमेशा मानसिकता बदलने से ही संभव है। ताकतवर को कमज़ोर कहने पर उसे कोई फर्क़ नहीं पड़ता परंतु सदियों से दबाए हुए को कमज़ोर कहने से काफी फ़रक पड़ता है।

बीज शब्द: समकालीन, स्त्री, पुरुष, मानसिकता, साहित्य में स्त्री, स्त्री लेखिकाएँ, शोषण, कारण, बदलाव की माँग।

सदियों से साहित्य और समाज की परंपरा स्त्री के केन्द्र में दैहिक संरचना रखती आई है। इसी कारण उसे कोमल, बलिदानी, करुण हृदय और ममता के अंतर्गत वर्गीकृत किया है। भारतीय संस्कृति जहाँ स्त्री को महान बनाती है, वहीं स्त्री विमर्श स्त्री को समान बनाने प्रयासरत है। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत, हिन्दू धर्म में स्त्री को देवी का स्थान प्राप्त है। ऋगवैदिक काल में स्त्रियाँ विदुषी और दार्शनिक थीं। वे ब्रह्मचर्य और विद्याध्ययन हेतु स्वतंत्र थीं। उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों को आश्रमों में शिक्षा व यज्ञों में भाग लेने का अधिकार था। धर्म और दर्शन में भी वह निपुण थी। शतपथ ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि कर्त्तव्य निर्वाह में स्त्री-पुरुष समान रूप से भाग लेते थे। उपनिषद काल तक आते-आते स्त्रियाँ दर्शन के क्षेत्र में अग्रणी रहीं। पुराणों में स्त्रियों को भी, पुरुषों के समान ही शिक्षा का पूर्ण अधिकार था।

हिन्दी व्याकरण में आए शब्द के अंत में 'ई' स्त्रीलिंगवाची शब्द- स्त्री, प्रकृति, शक्ति और बुद्धि, चारों ही स्त्रियों को व्याख्यायित करने में अद्भुत सिद्ध हुए हैं। अर्थात् स्त्री करुणा की प्रतिमूर्त्ति, प्रकृति जैसी अभेद प्रवृत्ति, निर्माण की शक्ति और विवेकशील बुद्धि का अर्द्धभाग है, जिसके बगैर जीवन की कल्पना असंभव है।

स्त्री विमर्श, दो शब्दों स्त्री और विमर्श से बना है। विमर्श का अर्थ है –'विचार, विवेचन, परीक्षण, समीक्षा, तर्क'[1]. (हिन्दी शब्दकोश में) वहीं रोहिणी अग्रवाल इसे 'जीवन्त बहस'[2] मानती हैं। उनका मानना है कि स्त्री को केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परंपरा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया । अतः स्त्री विमर्श से तात्पर्य- स्त्री विमर्श एक विचारधारा है, जिसे स्त्री के किसी एक दृष्टिकोण या मानसिकता का अध्ययन न कर समग्र विचारों का अध्ययन करना है। यह एक माध्यम है, जिसमें स्त्री के हितों पर विचार कर अपनी बात को रखा जाता है। इस तरह स्त्री विमर्श एक नवीन विचारधारा को समाज के समक्ष प्रस्तुत